

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड-५८

विदेह ठेठी-अंगिका लेखन-शैली निर्देशिका

५८

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड-५८

विदेह ठेठी-अंगिका लेखन-शैली निर्देशिका

आशीष अनचिन्हार | विदेह · २०२६

स्रोताधारित साहित्यिक आ भाषिक अध्ययन

प्रकाशन-विवरण

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय — खण्ड ५८। सम्पादक: आशीष अनचिन्हार।

प्रथम प्रकाशन: २०२६। भाषा: मैथिली। मुद्रित आकार: ६ × ९ इन्च। © २०२६

Gajendra Thakur / Preeti Thakur।

एहि खण्डमे ठेठी-अंगिकाक लेखन-शैली, उच्चारण, रूपरचना आ पाठ-सम्पादनक विवेचन अछि।

मूल ग्रन्थक लेखकीय कथनकें आलोचनाक निष्कर्ष बुझि नहि छापल गेल अछि। उद्धरण, उदाहरण, क्षेत्रीय रूप, वर्तनी-विकल्प आ मूल लेखकीय शैलीक प्रमाण-स्थिति सुरक्षित राखल गेल अछि।

सम्पादकीय भूमिका : पाठ, प्रमाण आ समीक्षा

ठेठी-अंगिकाक सर्वनाम, सहायक-क्रिया, कारक आ लोकप्रयोगक अलग संरचनाकें आधार मानैत भाषिक सम्पादनक प्रश्न विचारल गेल अछि।

मूल ग्रन्थक अध्याय-विन्यासक संग पाठ-सन्दर्भ आ आलोचनात्मक विवेचन प्रस्तुत अछि।

विस्तृत अनुक्रम : खण्ड ५८

एहि अनुक्रममे मूल ग्रन्थक विभाग आ विषयसभ अपन क्रममे प्रस्तुत अछि।

- १. ठेठी-अंगिकाक मूल दृष्टि
- २. प्रमाण आ पुनर्जाँचक क्रम
- ३. लिपि, ध्वनि आ तीन पाठ-स्तर
- ४. छोट शब्द आ भाषिक पहचान
- ५. सर्वनाम, सम्बन्ध आ सामाजिक दूरी
- ६. कारकचिह्न आ शब्दरचना
- ७. क्रिया-काल आ स्थानवाचक स्वर
- ८. स्रोतकोशक ५२० प्रविष्टि

- १. अनुवाद, साहित्य आ तकनीकी जाँच
- मूल शैली-पोथीक क्रमवार विभाग, उपशीर्षक, तालिका आ परिशिष्ट

प्रथम भाग — विषयवार विस्तृत समालोचना

१. ठेठी-अंगिकाक मूल दृष्टि

एहि निर्देशिकाक आग्रह अछि जे ठेठी-अंगिका गद्य ओकर अपना वाक्यचालि, सर्वनाम, सहायक क्रिया आ लोकजीवनक शब्दपर निर्मित हो। हिन्दी अथवा मैथिलीमेसँ शब्द बदलब मात्रसँ ठेठी-अंगिकाक स्वाभाविक वाणी नहि रचल जा सकैत। “ठेठी-अंगिका” एतय प्रकाशन-व्यवहारक नाम अछि; क्षेत्रीय भाषाक इतिहाससँ जुड़ल सर्व विवाद एही एकटा नामकरणसँ समाप्त नहि होइत। विशिष्ट ऐतिहासिक दावा लेल स्वतंत्र स्रोत देखेबाक चाही।

एहि कारण पाठ-निर्णयमे स्रोतक काल, विधा, संस्करण आ लक्ष्यपाठककेँ क्रमसँ राखल गेल अछि।

शोध-पद्धतिमे जे उदाहरण प्रकाशित ग्रन्थ अथवा सत्यापित वेबसाइटसँ निबद्ध नहि अछि, ओकरा स्वतन्त्र प्रमाणक दर्जा नहि देल जाए।

अन्तरसम्बन्धक दृष्टिसँ एहि प्रकरणक पाठकेँ एकरे लगक खण्डसभ, मूल पोथीक अनुक्रम आ विदेहक अभिलेखीय परम्परासँ जोड़िकऽ पढ़ब उपयोगी अछि। एहन पठनसँ भाषा, साहित्य, इतिहास, पहुँच आ सम्पादनक प्रश्न परस्पर सम्वादमे अबैत अछि, मुदा अलग स्रोतक भेद नहि मेटैत।

२. प्रमाण आ पुनर्जाँचक क्रम

स्पष्ट सम्पादकीय स्वीकृति, प्रमाणित स्थानीय व्यवहार, समानान्तर व्याकरण, आन भाषिक कोश, साहित्य आ मौखिक साक्ष्यक आधार अलग-अलग जाँचल जाए। शब्दक वेब आवृत्ति प्रमाणक पूर्ण विकल्प नहि। प्रत्यक्ष प्रमाणित रूप, साहित्यिक प्रयोग, क्षेत्रीय विकल्प आ पुनर्जाँचक रूप—एहि चारि श्रेणीकेँ पृथक रखने पाठककेँ शब्दक स्थितिक ज्ञान भेटैत अछि। एकहि रूपक अर्थ स्थान आ सामाजिक प्रसंगसँ बदलि सकैत अछि।

३. लिपि, ध्वनि आ तीन पाठ-स्तर

सामान्य गद्यमे सुपाठ्य युनिकोड देवनागरी प्राथमिक अछि। वैज्ञानिक उच्चारण-विवेचनमे ध्वनि-चिह्नक जरूरत पड़ि सकैत अछि; ऐतिहासिक उद्धरण तेसर श्रेणीक रूपमे जसक तस रहत। एहि तीन पाठ-स्तरकेँ एकरूप करब शोधक

हानि अछि। शास्त्रीय ध्वनि-प्रतिलेखनक चिह्न सामान्य बालपाठमे भरब आ मौखिक स्रोतक चिह्न हटायब—दूनु असावधानी अछि। पाठ-साक्ष्यक प्रश्न : एहि प्रसंगमे मूल प्रकाशनक शीर्षक, लिखित उदाहरण, क्षेत्र/विधा आ सम्पादकीय निर्णयक परिधि एक संग जाँचल जाए। उद्धरणक मूल अक्षररूपकें सुधारक नामपर नहि बदलब एहि समीक्षाक आवश्यक नीति अछि।

ध्वन्यात्मक मान्यता आ लिप्यन्तरणक साक्ष्यकें एक-दोसरसँ अलग देखबाक आवश्यकता अछि। एहि कारण पाठ-निर्णयमे स्रोतक काल, विधा, संस्करण आ लक्ष्यपाठककें क्रमसँ राखल गेल अछि।

वक्ता, क्षेत्र, उच्चारण-सन्दर्भ आ न्यूनतम युग्मक आधारपर एहि प्रतिपादनक पुनर्परीक्षण होयबाक चाही। शोध-पद्धतिमे जे उदाहरण प्रकाशित ग्रन्थ अथवा सत्यापित वेबसाइटसँ निबद्ध नहि अछि, ओकरा स्वतन्त्र प्रमाणक दर्जा नहि देल जाए।

४. छोट शब्द आ भाषिक पहचान

आरो, ई, ऊ, नै, के, कोन आ केना सन छोट रूपसभ भाषा-चिन्हक महत्त्वपूर्ण आधार अछि। लोकपदक एकटा सूची भाषा नहि बनबैत; वाक्यक जोड़-शब्द, सर्वनाम, निषेध आ स्थानवाचक सम्बन्ध पूरा संरचना बनबैत अछि। हिन्दीक और, यह, वह तथा मैथिलीक अछि/छथि एक-एक वाक्यमे यान्त्रिक प्रतिस्थापन करब ठेठी-अंगिकाक स्वतन्त्र व्याकरणकें छिपबैत अछि। रूपक अर्थ आ प्रसंगक आधार पहिने तय हो।

शब्दक अर्थ, पद-श्रेणी आ प्रयोगक्षेत्रकें स्थिर कोशीय लेबलमे सीमित करब कठिन अछि। एहि कारण पाठ-निर्णयमे स्रोतक काल, विधा, संस्करण आ लक्ष्यपाठककें क्रमसँ राखल गेल अछि।

सहप्रयोग, वाक्य-सन्दर्भ, क्षेत्रविशेष आ ऐतिहासिक स्रोत जाँचिकऽ निर्णय करब समीचीन अछि। शोध-पद्धतिमे जे उदाहरण प्रकाशित ग्रन्थ अथवा सत्यापित वेबसाइटसँ निबद्ध नहि अछि, ओकरा स्वतन्त्र प्रमाणक दर्जा नहि देल जाए।

५. सर्वनाम, सम्बन्ध आ सामाजिक दूरी

हम्मैं/हमरा, तोरा/तोहरा, ऊ/हौ, हुनी/हुनका सन मूल रूप स्रोतमे अलग प्रयोजनसँ दर्ज अछि। जे रूप कर्ता अछि, ओहि रूपकें सम्बन्ध वा कर्मक स्थानमे बिना परीक्षण नहि रखल जा सकैत। संवादमे वरिष्ठ व्यक्ति आ समान आयु मित्रक सम्बोधन एक नहि। आदर व्यक्त करबाक लेल सर्वनाम आ सहायक क्रिया दूनूक मेल आवश्यक; अनिश्चित अंत्यप्रत्यय मनसँ जोड़ब प्रामाणिक रूप नष्ट करैत अछि।

व्यक्ति, दूरी, सामाजिक सम्बन्ध आ सम्मानक बहुस्तरीय व्यवस्था एहि विषयक वास्तविक केन्द्रीय प्रश्न अछि। एहि कारण पाठ-निर्णयमे स्रोतक काल, विधा, संस्करण आ लक्ष्यपाठककें क्रमसँ राखल गेल अछि।

एकहि व्यक्तिक रूपभेदकें वाक्यमे ओकर व्याकरणिक भूमिका आ सामाजिक प्रसंगसँ जोड़िकऽ पढ़ल जाए। शोध-पद्धतिमे जे उदाहरण प्रकाशित ग्रन्थ अथवा सत्यापित वेबसाइटसँ निबद्ध नहि अछि, ओकरा स्वतन्त्र प्रमाणक दर्जा नहि देल जाए।

६. कारकचिह्न आ शब्दरचना

के, केरऽ/केरी/केरौ आ हमरऽ/तोहरऽ/ओकरऽ सन सम्बन्धचिह्नक वितरण स्रोतक भिन्न लेखन-स्तर दर्शबैत अछि। मैथिलीक “-क” सभ ठाम लगा देब भाषिक सम्पादन नहि। वचन, लिङ्ग, समूह-सूचक, प्रश्न आ नकारक प्रयोग क्रमशः परीक्षण चाही। उदाहरणक सन्दर्भ नबाँचने वर्तनीपर बहस करब शब्दक सामाजिक अर्थकें छोटा कऽ दैत अछि। पाठ-साक्ष्यक प्रश्न : एहि प्रसंगमे मूल प्रकाशनक शीर्षक, लिखित उदाहरण, क्षेत्र/विधा आ सम्पादकीय निर्णयक परिधि एक संग जाँचल जाए। उद्धरणक मूल अक्षररूपकें सुधारक नामपर नहि बदलब एहि समीक्षाक आवश्यक नीति अछि।

कारकक अर्थक सम्बन्ध आ ओकर प्रत्यक्ष परसर्ग-संकेत हमेशा एक-एक अनुपातमे नहि भेटैत अछि। एहि कारण पाठ-निर्णयमे स्रोतक काल, विधा, संस्करण आ लक्ष्यपाठककें क्रमसँ राखल गेल अछि।

कर्तृत्व, साधन, सम्प्रदान, स्रोत आ स्थानक अर्थकें अलग उदाहरणसँ परखब आवश्यक अछि। शोध-पद्धतिमे जे उदाहरण प्रकाशित ग्रन्थ अथवा सत्यापित वेबसाइटसँ निबद्ध नहि अछि, ओकरा स्वतन्त्र प्रमाणक दर्जा नहि देल जाए।

७. क्रिया-काल आ स्थानवाचक स्वर

क्रियामे काल, पक्ष, भाव, पूर्णता आ सम्मानक मेल ठेठी-अंगिकाक वाक्यक मूल प्राण अछि। कोणो उदाहरण देखिकेँ सर्व धातुक लेल समान व्याकरणिक विस्तार निकालब उचित नहि। एतय स्थान, दिशा, दूरी आ कथनक केन्द्रक चर्चा सेहो भाषिक तथ्य प्रदान करैत अछि। यात्राक बखत पात्र कोन ठामसँ बात करैत अछि, से सर्वनाम आ स्थानवाचक पदक अर्थ बदलिए सकैत अछि।

काल, पक्ष, भाव आ आदरकेँ एकटा मात्र प्रत्यय-सारणीमे समेटलासँ अर्थभेद ओझराएत। एहि कारण पाठ-निर्णयमे स्रोतक काल, विधा, संस्करण आ लक्ष्यपाठककेँ क्रमसँ राखल गेल अछि।

प्रत्येक क्रियारूपकेँ कर्ता, प्रसंग, पूर्ण वाक्य आ स्रोतसहित मिलेनाइ जरूरी अछि। शोध-पद्धतिमे जे उदाहरण प्रकाशित ग्रन्थ अथवा सत्यापित वेबसाइटसँ निबद्ध नहि अछि, ओकरा स्वतन्त्र प्रमाणक दर्जा नहि देल जाए।

८. स्रोतकोशक ५२० प्रविष्टि

संलग्न मूल निर्देशन ५२० स्रोतगत कोश-प्रविष्टिक उपयोगक नीति दैत अछि। एहि संख्या प्रस्तुति-कोशक परिधि सूचित करैत अछि, किन्तु प्रत्येक प्रविष्टिक रूप, अर्थ आ स्रोत अलग जाँच योग्य अछि। स्रोत-पंक्ति, लेखकक पुनर्लेखन आ सम्पादकीय प्रस्तावकेँ एकहि रूपमे छापला पर पाठक भ्रमित होएत। मूल शब्दक पास स्रोत-स्थिति देब सर्वाधिक उपयोगी उपाय अछि।

९. अनुवाद, साहित्य आ तकनीकी जाँच

कथा, लोकगीत, संवाद आ ऐतिहासिक अभिलेखमे स्थानीय वाणीक यथार्थ कतेक बचल अछि—ई अनुवादक मुख्य परीक्षण अछि। व्याकरण-शिक्षण आ रचनात्मक लेखनक उद्देश्य अलग रहितो एक-दोसरा सँ लाभ उठबैत अछि। डिजिटल प्रकाशनमे संधि, उच्चारणक संकेत, मात्रा आ लिपि रूपान्तरणक यान्त्रिक जाँच होएब आवश्यक अछि, मुदा ओकर पश्चात् मातृभाषी संपादकीय निरीक्षण अनिवार्य रहत। पाठ-साक्ष्यक प्रश्न : एहि प्रसंगमे मूल प्रकाशनक शीर्षक, लिखित उदाहरण, क्षेत्र/विधा आ सम्पादकीय निर्णयक परिधि एक संग जाँचल

जाए। उद्धरणक मूल अक्षररूपकेँ सुधारक नामपर नहि बदलब एहि समीक्षाक आवश्यक नीति अछि।

शब्द-प्रतिशब्द समानता अनुवादक पर्याप्त कसौटी नहि; अर्थ, विधा, लक्षित पाठक आ सांस्कृतिक संकेत साथ रहैत अछि। एहि कारण पाठ-निर्णयमे स्रोतक काल, विधा, संस्करण आ लक्ष्यपाठककेँ क्रमसँ राखल गेल अछि।

स्रोत आ लक्ष्यपाठक समानान्तर खण्डसँ अर्थ-हानि, अनावश्यक विस्तार आ शैली-विचलन चिन्हब जरूरी अछि। शोध-पद्धतिमे जे उदाहरण प्रकाशित ग्रन्थ अथवा सत्यापित वेबसाइटसँ निबद्ध नहि अछि, ओकरा स्वतन्त्र प्रमाणक दर्जा नहि देल जाए।

द्वितीय भाग — मूल शैली-पोथीक प्रत्येक विभागक विस्तृत समीक्षा

१. ठेठी-अंगिकाक मूल लेखन-दृष्टि

मूल पाठ — ठेठी-अंगिकाक लेखन अपन व्याकरण, ध्वनि-चालि, सर्वनाम, क्रिया आ लोकशब्द पर टिकल रहै छै। हिन्दी अथवा मानक मैथिलीमे वाक्य बनाकेँ केवल शब्द बदलि देल जाय तऽ मूल ठेठी-अंगिकाक लय नै बचै छै। ई निर्देशिका ई गलती रोकेँ लेल कार्यकारी लेखन-मानक देवे छै।

मूल पाठ — ‘ठेठी-अंगिका’ एहि पुस्तकमे सम्पादकीय कामक नाम छै; एकर मतलब ई नै जे विभिन्न ऐतिहासिक भाषा-वर्गीकरणक विवाद निर्णीत भऽ गेल छै। भाषिक इतिहासक दावा प्रमाण आ स्रोत-तिथि संग लिखल जाय; लेखनक निर्देश आ भाषा-परिवारक चर्चा अलग रहय।

मूल पाठ — मूल लेखक-वर्णन, क्षेत्रीय पात्रक संवाद, लोकगीत, पुरान उद्धरण, भाषिक सर्वेक्षण आ तकनीकी शब्दकोश—सबकेँ एक वर्तनीमे सटेब अनावश्यक छै। प्रत्येक रचनाक विधा पहिने चुनल जाय।

प्रमाणित स्थानीय भाषिक व्यवहार, लेखक-वर्णन, ऐतिहासिक उद्धरण आ पात्रक संवाद एक-दोसराक प्रतिस्थापन नहि अछि।

समेकित निष्कर्ष — भाषा-अध्ययनमे लेखकीय सुसंगति महत्वपूर्ण अछि, मुदा ओ वास्तविक वक्ताक स्वर, स्रोतक मूल अक्षर अथवा भाषा-साम्पर्कक साक्ष्यक विकल्प नहि बनैत।

२. साक्ष्यक क्रम आ सम्पादकीय अधिकार

मूल पाठ — स्पष्ट सम्पादकीय स्वीकृति, ठेठी-अंगिकाक प्रमाणित प्रयोग, गजेन्द्र ठाकुरक समानान्तर व्याकरण, अन्य व्याकरण-कोश, साहित्यिक पाठ आ क्षेत्रीय मौखिक साक्ष्य क्रमसँ जाँचल जाय। एक शब्द वेबपर बेसी बेर भेटै छै ताहिसँ ओकरा स्वतः मानक घोषित नै कएल जाय।

मूल पाठ — साक्ष्यक चारि स्तर राखल जाय—प्रत्यक्ष प्रमाणित रूप, साहित्यिक रूप, क्षेत्रीय विकल्प आ पुनर्जाँचक रूप। स्रोत अस्पष्ट होय तऽ ‘पुनर्जाँच’ कहू, मनसँ अर्थ वा उच्चारण गढ़ू नै।

मूल पाठ — समान लेखन-रूप भिन्न ठाम भिन्न अर्थ दे सकै छै। ताहि लेल शब्दकँ ओकर वाक्य, पात्र, क्षेत्र, काल आ स्रोतसँ काटि नहि देखू।

३. लिपि आ साधारण वर्तनी

मूल पाठ — नव पोथी, पत्रिका आ डिजिटल प्रकाशन लेल युनिकोड देवनागरी मुख्य लिपि छै। पुरान लिपि आ ऐतिहासिक स्रोतक चर्चा करल जा सकै छै, मुदा सामान्य पाठकक लेल खोजल, चुनल आ प्रतिलिपि कएल जा सकै एहन पाठ आवश्यक छै।

मूल पाठ — साधारण लेखनमे ध्वनिशास्त्रक सूक्ष्म चिह्न बेवजह भरल नै जाय। शब्दक अर्थ अथवा प्रमाणित रूप बिना बिगाड़ने सरल लिखन अपनाउ। मूल भाषावैज्ञानिक स्रोतमे अऽ, अं, नं जकाँ चिह्नक जरूरत होय तऽ ओहि विशेष प्रसंगमे यथावत राखू।

मूल पाठ — मैथिलीक मात्र ‘ड/ढ़’ नुक्ता-नियम ठेठी-अंगिकापर यान्त्रिक रूपसँ लागू नै होयत; ठेठी-अंगिकाक अपन शब्द-साक्ष्य आ ध्वनि-विवेचन देखकँ निर्णय लेल जाय। उद्धरणक मूल वर्तनी चुपचाप नै बदलू।

लिपि, उच्चारण आ ध्वनिमक तीन अलग स्तर अछि; एकर अदलाबदलीमे सूचना-हानि भऽ सकैत अछि। प्रमाणित स्थानीय भाषिक व्यवहार, लेखक-वर्णन, ऐतिहासिक उद्धरण आ पात्रक संवाद एक-दोसराक प्रतिस्थापन नहि अछि।

पद्धतिगत समीक्षा — मूल कोडबिन्दु, Unicode सामान्यीकरण, राउण्ड-ट्रिप परीक्षण आ पाठक पठनीयता जाँचू। सम्पादकीय निर्देशकें समस्त भाषिक समुदाय पर सार्वभौम नियमक रूपमे प्रस्तुत करब गलत होएत।

४. तीन पाठ-स्तरक भेद

मूल पाठ — पहिल स्तर सामान्य पाठकक सरल देवनागरी छै; कथा, निबन्ध, समाचार आ विद्यालय-पाठमे ई प्राथमिक रहत। दोसर स्तर उच्चारण-साक्ष्यवला भाषिक पाठ छै; शब्दकोश, न्यूनतम युग्म, ध्वनि-विश्लेषण आ सर्वेक्षणमे जरूरत अनुसार चिह्न राखल जाय।

मूल पाठ — तेसर स्तर मूल स्रोतक निष्ठावान पाठ छै। पुरान गीतक पाँति, पात्रक स्थानीय उच्चारण वा पाण्डुलिपिक विशेष अक्षर ओकर प्रमाणसहित जकाँक ताहि रूपमे छापू। मानकीकृत रूप दय चाही तँ अलग ‘सम्पादकीय रूप’ कहि दिअ।

मूल पाठ — ई तीन स्तर एकरा-दोसराक विकल्प नै, अलग कामक पद्धति छै। एके दस्तावेजमे स्तर बदलला पर पाठककें कारण बताउ।

५. छोट व्याकरणिक शब्दक महत्त्व

मूल पाठ — ठेठी-अंगिकाक पहिचान केवल लोककथा वा रंगीन संज्ञासँ नै बनै छै; आरो, ई, ऊ, नै, की, कोय, के, कोन, केना आ सम्बन्धसूचक रूप जकाँ छोट शब्द मुख्य संकेत छै।

मूल पाठ — मूल निर्देशिकामे आरो तटस्थ जोड़निहार रूपमे, ई निकट रूपमे, ऊ/हौ दूर रूपमे, हुनी आदरसूचक रूपमे, नै सामान्य नकार रूपमे दर्ज छै। ककरो भाषण वा साहित्यक प्रसंगक अनुसार विकल्प रहि सकै छै; ई रूपसभकें सब ठाम अन्धाधुन्ध नै लगाउ।

मूल पाठ — हिन्दीक और, यह, वह, नहीं जकाँ ढाँचा तथा मैथिलीक आ, अछि/छथि आदि रूपक सीधा प्रतिस्थापन करै सँ सावधान रहू। प्रत्येक रूप अपन भाषिक काम आ स्रोत अनुसार देखल जाय।

शब्दक अर्थ, पद-श्रेणी आ प्रयोगक्षेत्रकें स्थिर कोशीय लेबलमे सीमित करब कठिन अछि। प्रमाणित स्थानीय भाषिक व्यवहार, लेखक-वर्णन, ऐतिहासिक उद्धरण आ पात्रक संवाद एक-दोसराक प्रतिस्थापन नहि अछि।

पद्धतिगत समीक्षा — सहप्रयोग, वाक्य-सन्दर्भ, क्षेत्रविशेष आ ऐतिहासिक स्रोत जाँचिकऽ निर्णय करब समीचीन अछि। सम्पादकीय निर्देशकें समस्त भाषिक समुदाय पर सार्वभौम नियमक रूपमे प्रस्तुत करब गलत होएत।

६. सर्वनामक मूल रूप आ तिर्यक

मूल पाठ — मूल स्रोतमे हम्में/हम्मं, हमरा, हमरऽ/हमरी; तोह/तों/तोंय, तोरा/तोहरा; ऊ/हौ, ओकरा/होकरा; हुनी, हुनका, हुनकऽ/हुनकी जकाँ रूप दर्ज छै। ई सभ रूप एकहि वाक्यमे सजावट लेल परस्पर बदलब योग्य नै छै।

मूल पाठ — निकट संकेत लेल ई, एकरा/हेकरा, एकरऽ/हेकरऽ; आदर, दूरी आ सम्बन्ध अनुसार अलग रूप चुनल जाय। पात्रक सम्मान बदलला पर सम्बोधन, सर्वनाम आ सहायक क्रिया तीनू देखू।

मूल पाठ — सूत्र: कर्ता के? ओकरा की चाही? स्वामित्व ककर? दूरी/आदर कतेक? उत्तर मिले परहि सम्बन्धित रूपक चयन करू। कोनो रूपक व्याकरणिक काम स्रोतमे स्पष्ट नै होय तँ ओकरा सावधानी-श्रेणीमे राखू।

व्यक्ति, दूरी, सामाजिक सम्बन्ध आ सम्मानक बहुस्तरीय व्यवस्था एहि विषयक वास्तविक केन्द्रीय प्रश्न अछि। प्रमाणित स्थानीय भाषिक व्यवहार, लेखक-वर्णन, ऐतिहासिक उद्धरण आ पात्रक संवाद एक-दोसराक प्रतिस्थापन नहि अछि।

पद्धतिगत समीक्षा — एकहि व्यक्तिक रूपभेदकें वाक्यमे ओकर व्याकरणिक भूमिका आ सामाजिक प्रसंगसँ जोड़िकऽ पढ़ल जाए। सम्पादकीय निर्देशकें समस्त भाषिक समुदाय पर सार्वभौम नियमक रूपमे प्रस्तुत करब गलत होएत।

७. आदर, सामाजिक सम्बन्ध आ संवाद

मूल पाठ — ठेठी-अंगिकामे आदरक सम्बन्ध सर्वनामक संग क्रियामे सेहो प्रकट हो सकै छै। ‘हुनी’ चुनला पर क्रियाक समुचित आदरसूचक रूप खोजू; हिन्दी अथवा मैथिली अन्त्यप्रत्यय बिनाप्रमाण नै थोपल जाय।

मूल पाठ — गामक वरिष्ठ व्यक्ति, बच्चा, निकट मित्र, परिवारक सदस्य, पेशागत सम्बोधन आ अनजान लोकक संवाद एके स्वरमे लिखल जाय तँ कथा कमजोर होयत। लेखक-वर्णन स्थिर रह्य, पात्रक भिन्न आवाज बचल रह्य।

मूल पाठ — संवादमे बोली-मिश्रण वास्तवमे पात्रक स्वभाव/सम्पर्कक हिस्सा होय तँ स्रोत-निष्ठ राखू; सामान्य वर्णनमे अनजानमे घुसल हिन्दी अथवा मैथिली व्याकरण हटाऊ।

८. सम्बन्धचिह्न आ सम्पत्ति-बोध

मूल पाठ — ठेठी-अंगिकाक सम्बन्धबोधमे के, केरऽ/केरी/केरौ आ सर्वनाम-आधारित हमरऽ/तोहरऽ/ओकरऽ जकाँ रूप अपन-अपन संदर्भ राखै छै। एकरे बदला मैथिलीक ‘क’ सभ ठाम नै लगाउ।

मूल पाठ — साधारण व्याख्यात्मक गद्यमे ‘के’ मूल स्रोतमे भेटैत छै; साहित्यिक पाठमे केरऽ/केरौ जकाँ रूप सेहो अर्थपूर्ण छै। पाठकक सुविधा लेल एके अनुच्छेदमे अनियन्त्रित मिश्रण नहि करू।

मूल पाठ — उदाहरणक अधिकार सदा स्रोतकें दियौ। ऐतिहासिक शीर्षकमे जँ केरौ अछि तँ ओकरा सुधरि के या क बना देब स्रोत-विकृति होयत।

९. सहायक-क्रियाक परिवार

मूल पाठ — छै/छी, छैकै/छिकै/छिका, छिऐ, छेलिए/छल्लिए/छल्लियै, छल्लै/छल्लै, रहै/रहैं—ई सभ मूल स्रोतमे दर्ज सहायक-क्रियाक परिवार छै। एकरा वाक्यक व्यक्ति, काल, अर्थ, आदर आ स्थानीय बोलीक अनुसार चुनल जाय।

मूल पाठ — हिन्दी है/हैं/था वा मानक मैथिली अछि/छथि लयाकें एहि परिवारकें मिटाउ नै। एक कथावाचकक आवाजमे बिना कारण छै, छिकै, छिऐ, रहल आ बाहरी रूप बेर-बेर बदलल जाय तऽ रचना असंगत होयत।

मूल पाठ — कोनो क्रियारूपक संपूर्ण प्रमाण नहि होय तँ ओकरा मानक कहि छापब नै चाही। मूल स्रोतक उदाहरण, वक्ता अथवा क्षेत्र-सूचना जुटाकें निर्णय करू।

काल, पक्ष, भाव आ आदरकें एकटा मात्र प्रत्यय-सारणीमे समेटलासँ अर्थभेद ओझराएत। प्रमाणित स्थानीय भाषिक व्यवहार, लेखक-वर्णन, ऐतिहासिक उद्धरण आ पात्रक संवाद एक-दोसराक प्रतिस्थापन नहि अछि।

पद्धतिगत समीक्षा — प्रत्येक क्रियारूपकें कर्ता, प्रसंग, पूर्ण वाक्य आ स्रोतसहित मिलेनाइ जरूरी अछि। सम्पादकीय निर्देशकें समस्त भाषिक समुदाय पर सार्वभौम नियमक रूपमे प्रस्तुत करब गलत होएत।

१०. क्रियाक काल, पक्ष आ भाव

मूल पाठ — घटना कहिया भेल? चलि रहल छै कि सम्पन्न? अभ्यस्त काज छै कि एक बेरक घटना? वक्ता संभावना कहै छै कि आदेश? एतेक अलग सवालक उत्तर भेटला पर क्रिया चुनू।

मूल पाठ — मूल पाठमे जाय रहलऽ/रहली जकाँ प्रगतिशील ढाँचा, गेली/गेला जकाँ भूत-संबद्ध भेद, लिखलकै जकाँ सम्पन्न क्रिया आ जैबै जकाँ भविष्यरूपक उदाहरण उपलब्ध छै। ई रूपसभ व्यक्ति आ अर्थ बिना देखलें एक-दोसराक स्थानपर नै लगाउ।

मूल पाठ — केवल एकटा क्रियाक रूप देखिकें दस क्रियाक अनिश्चित तालिका नहि बनाउ। परिशिष्टक दस-क्रिया सारणी क्रियाक प्रयोग-जाँच लेल साधन छै, पूर्ण प्रमाणित विश्वकोश नै।

काल, पक्ष, भाव आ आदरकें एकटा मात्र प्रत्यय-सारणीमे समेटलासँ अर्थभेद ओझराएत। प्रमाणित स्थानीय भाषिक व्यवहार, लेखक-वर्णन, ऐतिहासिक उद्धरण आ पात्रक संवाद एक-दोसराक प्रतिस्थापन नहि अछि।

पद्धतिगत समीक्षा — प्रत्येक क्रियारूपकें कर्ता, प्रसंग, पूर्ण वाक्य आ स्रोतसहित मिलेनाइ जरूरी अछि। सम्पादकीय निर्देशकें समस्त भाषिक समुदाय पर सार्वभौम नियमक रूपमे प्रस्तुत करब गलत होएत।

११. पूर्णता, कर्ताचिह्न आ ध्वन्यात्मक रूप

मूल पाठ — मूल भाषिक स्रोतमे सम्पन्न सकर्मक वाक्यक कर्ता-संबंधी नं चिह्नक उदाहरण दर्ज छै, जेना राम नं ... लिखलकै। सामान्य साहित्यिक वर्तनीमे ओकर स्वीकृत रूप स्पष्ट भेला बिना केवल चिह्न हटाइ देब अर्थक भेद हटा सकै छै।

मूल पाठ — भाषावैज्ञानिक पाठमे न जकाँ सूक्ष्म लेखन राखू; पाठक-अभिमुख गद्यमे स्थानीय मानकीकरण आ स्रोतक विचार करिकेँ सरल रूप चुनू।

मूल पाठ — ध्वनिक साक्ष्य ओहि घटना-वाक्यक अर्थसँ जोड़ल रहय। विकृत छायापाठसँ रूप निर्धारित नहि करू।

१२. बहुवचन, समूह आ लिङ्ग

मूल पाठ — सिनी, सनी, आरनी, सब आदि समूहसूचक रूप मूल सामग्रीमे दर्ज छै। सभ ठाम एके प्रत्यय यान्त्रिक ढंगसँ नै जोड़ू। समूहक अर्थ, व्यक्ति बनाम वस्तु आ स्रोतक रजिस्टर देखू।

मूल पाठ — हिन्दी जकाँ प्रत्येक स्त्री-वाचक कर्ताक कारण हर क्रियामे लिङ्गान्त बदलि देब ठेठी-अंगिका नै छै। स्रोतमे सीता गेली, राम गेला जकाँ भेद भेटैत छै, मुदा मरद जाय छै आ जनानी जाय छै जकाँ वर्तमान वाक्यक रूप समान हो सकै छै।

मूल पाठ — सम्बन्ध, वचन आ आदरक एक-एक परिणाम अलग परखबाक चाही। एक क्षेत्रक रूपकेँ सम्पूर्ण ठेठी-अंगिका क्षेत्रक सार्वभौमिक नियम नहि कहू।

१३. नकार आ ओकर अर्थ-सीमा

मूल पाठ — साधारण संवाद आ अनेक तटस्थ वाक्यमे नै मूल स्रोतक प्राथमिक नकार छै। नहि साहित्यिक वा विशेष स्रोतमे भेटि सकै छै; हिन्दी नहीं बिना विशेष कारणक सामान्य लेखनमे नै राखू।

मूल पाठ — नकार शब्दक कात रखने मात्र पर्याप्त नै; कोन घटना नकारल जाय छै, कोन मात्रा नकारल जाय छै, आ कोन विकल्प बचै छै—ई देखल जाय।

मूल पाठ — दुइ नकार आ जोरदार वाक्यक स्थानीय प्रयोगकेँ हिन्दी व्याकरणक मापसँ गलत नहि ठहराउ। मूल क्षेत्रीय पाठ आ अर्थ पहिने जाँचू।

अर्थ-निर्माण शब्दकोशक परिभाषामात्र नहि; सन्दर्भ, निहितार्थ आ वक्ताक अभिप्रायसँ बनैत अछि। प्रमाणित स्थानीय भाषिक व्यवहार, लेखक-वर्णन, ऐतिहासिक उद्धरण आ पात्रक संवाद एक-दोसराक प्रतिस्थापन नहि अछि।

पद्धतिगत समीक्षा — समरूप शब्द, बहुअर्थक प्रयोग आ अनुवाद-चयनक प्रमाणित पाठसँ जाँच करी। सम्पादकीय निर्देशकें समस्त भाषिक समुदाय पर सार्वभौम नियमक रूपमे प्रस्तुत करब गलत होएत।

१४. प्रश्नवाचक आ सम्बन्धवाचक

मूल पाठ — के, कोन, केकरऽ/किनकऽ, केकरा/किनका, की, केना, कैन्हऽ, कन्न आदि मूल स्रोतमे अलग-अलग व्याकरणिक काम लेल दर्ज छै। एकहि ‘कौन’ अथवा ‘कैसे’क अनुवाद सभ प्रसंगमे एके रूपें नहि हो सकै छै।

मूल पाठ — जे, जोन, जेकरा जकाँ सम्बन्धवाचकक प्रयोग वाक्यक दोसर अंशसँ मिलल रहय। प्रश्नक बल आ सम्मानक स्तर क्रियासँ जुड़ल रहैत छै।

मूल पाठ — अंग्रेजीक उलटल प्रश्न-क्रम वा हिन्दी ‘कृपया’क बनावट बिना आवश्यकता प्रति वाक्य नै आनू। स्वाभाविक विनय, सम्बोधन आ क्रिया चुनल जाय।

१५. ठाम, दिशा आ दूरी

मूल पाठ — ऐंजां, वैंजां, ओतय जकाँ स्थानसूचक रूप मूल निर्देशिकामे दर्ज छै। समीप, दूरी आ दिशाक अर्थ स्पष्ट राखू; एकर बदला हिन्दी यहाँ/वहाँ लियाकऽ वाक्य ठेठी-अंगिका नै बनै छै।

मूल पाठ — गाम, हाट, नदिक धार, पोखरि, खेत, नाव, पुल आ बान्हक शब्द स्थानीय भूगोलक हिस्सा छै। एके ‘नाला’ या ‘बाँध’ नाम दय कय अलग वस्तुकें नहि मिलाउ।

मूल पाठ — स्रोतगत स्थाननामक वर्तनी बदलबाक पहिने प्रमाण देखू। नक्शा, लोकस्मृति आ साहित्यिक दृश्य एके साक्ष्य-स्तर नै छै।

१६. विशेषण, तुलना आ अभिव्यक्ति

मूल पाठ — हरऽ/गोरऽ तथा हरका/गोरका जकाँ स्रोतगत विशेषणरूप अलग रजिस्टर वा व्याकरणिक प्रसंगमे मिलै छै। शोभा लेल जे रूप मनमे आयल ओहि रूपकें घुसाउ नै।

मूल पाठ — तुलना लेल सें/सं/से आ बेसी/बेशी जकाँ स्थानीय रूप भेटैत छै। हिन्दीका लम्ब व्युत्पन्न विशेषण अथवा अंग्रेजी-प्रेरित तुलना नकल नहि करू।

मूल पाठ — विशेषण ठेठी-अंगिकाक लोक-रंग देखावै सँ पहिने अर्थ स्पष्ट करै।
एक शब्द भिन्न ठाम भिन्न गुण कहैत हो तऽ संदर्भसँ अर्थ निश्चित करू।

तुलनात्मक प्रतिपादनमे समानता आ भिन्नताक दूनू पक्ष व्यवस्थित प्रमाणसहित
राखल जाए। प्रमाणित स्थानीय भाषिक व्यवहार, लेखक-वर्णन, ऐतिहासिक
उद्धरण आ पात्रक संवाद एक-दोसराक प्रतिस्थापन नहि अछि।

पद्धतिगत समीक्षा — प्रमाण-प्राप्त क्षेत्र आ अप्राप्त क्षेत्रक सीमा स्पष्ट करब
वैज्ञानिक निष्ठाक आधार अछि। सम्पादकीय निर्देशकें समस्त भाषिक समुदाय
पर सार्वभौम नियमक रूपमे प्रस्तुत करब गलत होएत।

१७. सहचर शब्द आ युग्म

मूल पाठ — कोल-कोलासी, गप-सरक्का, आलती-पालथी; धिया-पुता; कानै-धुनै,
कानै-कुनै; कागज-पत्तर—मूल पाठमे दर्ज युग्मक उदाहरण छै। ई ध्वनि,
सामाजिक अर्थ आ भावक समूह कहि सकै छै।

मूल पाठ — एहन रूपकें सामान्य हिन्दी शब्दसँ बदलि देलासँ कथाक स्वभाव
बदलि जाइत छै। मुदा ककरो युग्मक अर्थ निश्चित नहि हो तऽ अनुमानसँ
कोशार्थ नहि लिखू।

मूल पाठ — शोधगद्यमे पहिल बेर ई रूपक अर्थ स्पष्ट कएल जाय; कथा वा
गीतमे प्रसंगक लय आ लोकसाक्ष्य सुरक्षित रहय।

१८. लोकजीवन, पेशा आ विशिष्ट शब्द

मूल पाठ — खेती, धान, माछ, नाव, नदिक धारा, विवाह, गोतिया, भूख, श्रम,
जाल, माटि आ उत्सव संबंधी स्थानीय शब्द ठेठी-अंगिकाक अनुभवनिष्ठ
अभिलेख छै। एकरा साधारण हिन्दी व्यापक नाममे समेटि देल जाय तऽ
सामाजिक जानकारी घटैत छै।

मूल पाठ — विशेष शब्दक अर्थ तय करै समय मूल सन्दर्भ, वस्तुक काम, क्षेत्रक
बोलनिहार आ प्रकाशित शब्दकोश देखू। दू निकट-ध्वनिवला शब्दकें एक नहि
मानू।

मूल पाठ — साहित्यक शब्दसूची स्रोत-आधारित होयत; पाठकक सुविधा लेल
व्याख्या देल जाय, मुदा बोलनिहारक वाणी नष्ट नहि हो।

१९. निकटध्वनि, अनेकार्थकता आ त्रुटि

मूल पाठ — मूल स्रोतमे कप्पा/खोपा, कोरनी/खोरनी, किल्ला/किला, हर/हउर, रंग/रकम जकाँ तुलना चेतावनी रूपमे देल गेल छै। देखैमे छोट भेद अर्थकें बदलि सकै छै।

मूल पाठ — हिन्दी वर्तनी-जाँचक सुझाव देखिकें अपरिचित अंगिका शब्द तुरन्त बदलू नै। कोनो रूप अपरिचित छै, ई एकरे गलत होयबाक प्रमाण नै।

मूल पाठ — शब्दक अर्थक साथ संज्ञा/क्रिया, क्षेत्र, साक्ष्य-पंक्ति, लोक-उपयोग आ सम्बद्ध युग्म राखू। एहन कोशभेद सम्पादनक सर्वोत्तम सुरक्षा छै।

ध्वन्यात्मक मान्यता आ लिप्यन्तरणक साक्ष्यकें एक-दोसरासँ अलग देखबाक आवश्यकता अछि। प्रमाणित स्थानीय भाषिक व्यवहार, लेखक-वर्णन, ऐतिहासिक उद्धरण आ पात्रक संवाद एक-दोसराक प्रतिस्थापन नहि अछि।

पद्धतिगत समीक्षा — वक्ता, क्षेत्र, उच्चारण-सन्दर्भ आ न्यूनतम युग्मक आधारपर एहि प्रतिपादनक पुनर्परीक्षण होयबाक चाही। सम्पादकीय निर्देशकें समस्त भाषिक समुदाय पर सार्वभौम नियमक रूपमे प्रस्तुत करब गलत होएत।

२०. अनुवाद आ रूपान्तरक नियम

मूल पाठ — पहिले मूल पाठक अर्थ आ सामाजिक सम्बन्ध बुझू; तकर बाद ठेठी-अंगिकाक सर्वनाम, सहायक क्रिया, काल, नकार आ वाक्यलयमे नव वाक्य बनाउ। हिन्दी/अंग्रेजीक वाक्य-साँचा पर अंगिका शब्द चिपकाइ देब अनुवाद नहि।

मूल पाठ — मूल पाठमे जँ सम्मान, हास्य, संशय, व्यंग्य वा लोकमुहावरा छै तँ ओकर प्रभाव बनी रहय। स्रोतकें शब्दशः अनुवादित करैत काव्यात्मक अर्थ अथवा बोलीगत नाजुक भेद नष्ट नहि करू।

मूल पाठ — अनुवाद पूरा भेला पर मूलक प्रत्येक मुख्य सूचना फेर मिलाउ। घटना, पात्र, काल, कारण, नदी/स्थानक नाम आ कथनक भरोसेक स्तरक जाँच करू।

शब्द-प्रतिशब्द समानता अनुवादक पर्याप्त कसौटी नहि; अर्थ, विधा, लक्षित पाठक आ सांस्कृतिक संकेत साथ रहैत अछि। प्रमाणित स्थानीय भाषिक

व्यवहार, लेखक-वर्णन, ऐतिहासिक उद्धरण आ पात्रक संवाद एक-दोसराक प्रतिस्थापन नहि अछि।

पद्धतिगत समीक्षा — स्रोत आ लक्ष्यपाठक समानान्तर खण्डसँ अर्थ-हानि, अनावश्यक विस्तार आ शैली-विचलन चिन्हब जरूरी अछि। सम्पादकीय निर्देशकें समस्त भाषिक समुदाय पर सार्वभौम नियमक रूपमे प्रस्तुत करब गलत होएत।

२१. कथा, संवाद, गीत आ नाटक

मूल पाठ — कथा-वर्णनमे ठेठी-अंगिकाक स्वाभाविक क्रियाक गति राखू; पात्रक संवादमे क्षेत्रीय रूपक अन्तर रहि सकै छै। सभ पात्रकें एक मानक स्वर दय कऽ कथा समतल नहि करू।

मूल पाठ — लोकगीतमे मूल पाँति, छन्द, पुनरुक्ति आ सम्बोधन सुरक्षित रहय। पुरान शीर्षक वा लोककथा शब्दक अशुद्धिक घोषणा केवल आधुनिक चलनसँ नहि होय।

मूल पाठ — नाटकमे सम्बोधनक सामाजिक दूरी आ मञ्चस्थितिक सुसंगति देखू। गीतक वैकल्पिक रूप छापबाक हो तँ ‘पाठान्तर’ कहि स्रोत बताउ।

२२. समीक्षा, इतिहास आ अध्ययन

मूल पाठ — साहित्यिक समीक्षामे लेखकक वाणी, पात्रक कथन, लोकगण्य आ बाहरी इतिहास—चारू अलग प्रमाण-स्तर छै। उपन्यासमे कहल बात स्वतः ऐतिहासिक सत्य नहि।

मूल पाठ — भाषा-वर्गीकरणक विवादक जिक्र करैत समय स्रोत आ समय-सन्दर्भ दियौ। पुरान सर्वेक्षण आ आधुनिक भाषिक सूचीमेसँ एककें सर्वकालिक सत्य मानि दोसराकें मिटाउ नै।

मूल पाठ — तकनीकी शब्द आवश्यक होय तँ मूल नामक साथ सरल ठेठी-अंगिका अर्थ लिखू। एक अवधारणाकें एक अध्यायमे अलग-अलग नाम नहि बदलू।

ऐतिहासिक पुनर्निर्माणकें केवल समान ध्वनिक आधारपर वंशानुक्रमक दावा नहि बनाओल जा सकैत अछि। प्रमाणित स्थानीय भाषिक व्यवहार, लेखक-वर्णन, ऐतिहासिक उद्धरण आ पात्रक संवाद एक-दोसराक प्रतिस्थापन नहि अछि।

पद्धतिगत समीक्षा — काल-साक्ष्य, पाठ-तिथि, वैकल्पिक सम्पर्क-व्याख्या आ स्रोतगत अनिश्चितता स्पष्ट राखू। सम्पादकीय निर्देशकें समस्त भाषिक समुदाय पर सार्वभौम नियमक रूपमे प्रस्तुत करब गलत होएत।

२३. स्रोतकोशक ५२० प्रविष्टि पढ़बाक नीति

मूल पाठ — मूल विस्तारमे ५२० शब्द-प्रविष्टि, संक्षिप्त अर्थ आ स्रोत-संकेत उपलब्ध छै। ई कुल संख्या सम्पादकीय संकलनक आकार देखबैत छै; ५२०क प्रत्येक प्रविष्टि एकही प्रमाण-स्तर पर प्रमाणित घरक अनिवार्य शब्द मानब उचित नै।

मूल पाठ — ‘A-HOUSE’, ‘B-CORPUS’, ‘PHON’, ‘REVIEW’ जकाँ मूल संकेत संकलकक कार्य-श्रेणी छै। कोनो रूपक नियम तय करैत समय प्राथमिक स्रोत आ वास्तविक उदाहरणक जाँच अपेक्षित छै।

मूल पाठ — अन्तिम परिशिष्टमे विस्तृत मूल शब्दसंग्रह स्रोत-पाठक रूपमे राखल गेल छै, जाहिसँ पूर्व संकलन सुरक्षित रह्य; ओकर English अर्थ-संकेत स्रोत-टिप्पणी मात्र छै, नव गद्यक भाषा-मानक नहि।

२४. सारणीमे व्याकरणक जाँच

मूल पाठ — क्रिया, सहायक-क्रिया, सर्वनाम, स्थानसूचक, प्रश्नवाचक आ नकारक सारणी मूल स्रोत सँ अलग-अलग आयल छै। ओहि कारण एक सारणीसँ दोसर सारणीमे समान शब्दक भिन्न रूप भेटि सकै छै।

मूल पाठ — एहन स्थिति गलत रूप मानिकें तुरन्त सुधारू नै। स्थान, काल, व्यक्ति, रजिस्टर आ लिखन-स्तरक भेद पहिने खोजू।

मूल पाठ — सारणी-प्रमाणक काज लेखककें सत्यापनक पथ देखेनाय छै; नव क्षेत्रीय प्रमाण बिना सम्पूर्ण भाषिक क्षेत्रक एकरूपता घोषित करब नहि।

२५. हिन्दी आ मैथिली प्रभावक परीक्षण

मूल पाठ — और, यह, वह, नहीं, किसी, कैसे, है/था आदि हिन्दी-साँचा; आ, अच्छि/छथि, सर्वत्र ‘-क’ आदि मानक मैथिली-साँचा स्रोतविहीन रूपें ठेठी-अंगिका गद्यमे भेटै तऽ संपादकीय जाँच करू।

मूल पाठ — मूल उद्धरण वा पात्रक वास्तविक बहुभाषिक बोलीमे ई रूप आ सकै छै। एहि लेल ई चेतावनी सूची मात्र छै, अन्धाधुन्ध खोज-बदल आदेश नहि।

मूल पाठ — जँ पूरा वाक्य हिन्दी वा मैथिली ढाँचे पर टिकल छै, तऽ केवल व्याकरणिक किछु शब्द बदलल पर्याप्त नहि; अर्थ बुझकै अंगिकाक नव वाक्य लिखू।

२६. यन्त्र-जाँच आ मानव निर्णय

मूल पाठ — अन्तिम परिशिष्टक चिह्न-परीक्षण, नियमित अभिव्यक्ति आ शब्द-सूची त्वरित चेतावनी दय सकै छै। मुदा ओहि यन्त्र-जाँचसँ सम्मानसूचक, समय, अर्थ, मुहावरा आ क्षेत्रक उपयुक्तता स्वतः सिद्ध नहि होयत।

मूल पाठ — ‘गंभीर त्रुटि’, ‘पुनर्जाँच’ आ ‘स्रोतगत विकल्प’ अलग नतीजा छै। मूल साहित्यिक उद्धरणक भीतर भेटल हिन्दी शब्द सन्देह हो सकै छै, मुदा ओकरा स्वतः काटि देब नहि।

मूल पाठ — कोनो यन्त्रसँ शब्द बदलबाक पहिने पूरा वाक्य पढ़; बादमे पन्ना-दर-पन्ना अक्षरक नमूना, शीर्षक, सटीक मूल उद्धरण आ संदर्भ-सूची देखू।

२७. परिशिष्टक स्रोत-संकेत आ इतिहास

मूल पाठ — मूल दस्तावेजक स्रोत-सूचीमे गजेन्द्र ठाकुरक समानान्तर व्याकरण, कुंदन अमिताभक अंगिका व्याकरण, अंगिका शब्दकोश, साहित्यिक गद्य आ अंगिका साहित्यिक इतिहासक उल्लेख छै। ई स्रोत-सूचक दत्तांश मूल दस्तावेजक आधारपर सुरक्षित छै; एहि संस्करणमे नव बाहरी सत्यापनक दावा नहि।

मूल पाठ — मैथिलीक ‘भाषापाक’ आ इग्नूक भाषा-पाठ्यक्रमसँ लिपि-शिक्षण, स्रोत-समीक्षा आ सम्पादनक पद्धतिक तुलना कएल जा सकै छै, मुदा ओ स्रोत ठेठी-अंगिकाक क्रिया-प्रत्यय सिद्ध नै करै छै।

मूल पाठ — स्रोत-विवेचनमे जँ प्रामाणिकता बदलैत छै, तँ नव शोधक आधारपर क्रमवद्ध संशोधन जारी रहत।

ऐतिहासिक पुनर्निर्माणकें केवल समान ध्वनिक आधारपर वंशानुक्रमक दावा नहि बनाओल जा सकैत अछि। प्रमाणित स्थानीय भाषिक व्यवहार, लेखक-वर्णन, ऐतिहासिक उद्धरण आ पात्रक संवाद एक-दोसराक प्रतिस्थापन नहि अछि।

पद्धतिगत समीक्षा — काल-साक्ष्य, पाठ-तिथि, वैकल्पिक सम्पर्क-व्याख्या आ स्रोतगत अनिश्चितता स्पष्ट राखू। सम्पादकीय निर्देशकें समस्त भाषिक समुदाय पर सार्वभौम नियमक रूपमे प्रस्तुत करब गलत होएत।

२८. अन्तिम प्रकाशन-पूर्व परीक्षा

मूल पाठ — पूर्ण मूल पाठ, उद्धरण, सारणी आ स्थानीय शब्दक अर्थ मिलाउ। लेखक-वर्णन आ संवादक सीमा जाँचू। सर्वनाम, सम्मानसूचक, काल, पक्ष, सहायक क्रिया, नकार आ स्थानसूचकक अनावश्यक मिश्रण दूर करू।

मूल पाठ — प्रकाशनमे देवनागरी अक्षर स्पष्ट, संयोजक मात्रासभ सही, पन्नाक भीतर सामग्री सुरक्षित, अनुक्रमणिका मिलल आ स्रोत-पञ्जी विश्वसनीय रहय। QR कोडक वास्तविक गन्तव्य अलग जाँचल जाय।

मूल पाठ — सम्पादकीय शुद्धिक नामपर पुरान लोकपाठक रूप, पद-संख्या, गीतक पुनरुक्ति, अर्थ वा सामाजिक आवाज नहि मिटाउ। नव नियम मात्र प्रमाण-सापेक्ष जोड़ू।

परिशिष्ट • स्रोतगत सारणी आ दस्तावेजी उदाहरण

मूल पाठ — अग्रिम सारणीसभ संलग्न मूल निर्देशिकासँ ली गेल अछि। एतय दर्ज विकल्प, संकेत आ अर्थक प्रमाण-स्थिति एकसमान नहि मानल जाय। मूल अंग्रेजी अर्थलेबल जहाँ अछि, ओ स्रोतगत अभिलेखक अंग अछि; मुख्य लेखनक भाषा-मानक नहि।

स्रोत-पञ्जी आ सम्पादकीय टिप्पणी

मूल पाठ — मुख्य मूल स्रोत : Videha Thethi-Angika Style Manual, Batch 2 Expanded (संलग्न पाण्डुलिपि)।

मूल पाठ — गजेन्द्र ठाकुर, मैथिलीक एकटा समानान्तर व्याकरण, रचना आ भाषा विज्ञान ठेठी-अंगिका आ बज्जिकाकें संग लऽ कऽ — मूल निर्देशिकामे उल्लिखित भाषा-संरचनाक स्रोत ।

मूल पाठ — मूल अंगिका दस्तावेजक स्रोत-संकेत : कुंदन अमिताभ, व्यावहारिक अंगिका व्याकरण; अंगिका शब्दकोश; अंगिका कहानी आ गद्य; डॉ. डोमन साहु 'समीर' आदि, अंगिका साहित्य केरौ इतिहास । विस्तृत प्रकाशन-उल्लेख मूल सारणीमे सुरक्षित अछि ।

मूल पाठ — तुलनात्मक सम्पादन-पद्धतिक स्रोत : भाषापाक; इग्नू मैथिली आधार पाठ्यक्रम । ई स्रोतसभकें सम्बन्धित भाषाक विशिष्ट क्रियारूपक प्रमाण नहि मानल गेल अछि ।

तेसर भाग — समस्त उपशीर्षक आ तालिकाक विषय-पञ्जी

भाषिक रजिस्टरक श्रेणी

लिपि आ स्रोत-निष्ठ लेखनक स्तर

लिपि, उच्चारण आ ध्वनिमक तीन अलग स्तर अछि; एकर अदलाबदलीमे सूचना-हानि भऽ सकैत अछि । मूल कोडबिन्दु, Unicode सामान्यीकरण, राउण्ड-ट्रिप परीक्षण आ पाठक पठनीयता जाँचू ।

सामान्य शब्द-चयनक तुलना

शब्दक अर्थ, पद-श्रेणी आ प्रयोगक्षेत्रकें स्थिर कोशीय लेबलमे सीमित करब कठिन अछि । सहप्रयोग, वाक्य-सन्दर्भ, क्षेत्रविशेष आ ऐतिहासिक स्रोत जाँचिकऽ निर्णय करब समीचीन अछि ।

सर्वनामक प्रमाण-स्तर

व्यक्ति, दूरी, सामाजिक सम्बन्ध आ सम्मानक बहुस्तरीय व्यवस्था एहि विषयक वास्तविक केन्द्रीय प्रश्न अछि । एकहि व्यक्तिक रूपभेदकें वाक्यमे ओकर व्याकरणिक भूमिका आ सामाजिक प्रसंगसँ जोड़िकऽ पढ़ल जाए ।

मूल स्रोत-सारणी

सहायक-क्रियाक परिवार

काल, पक्ष, भाव आ आदरकें एकटा मात्र प्रत्यय-सारणीमे समेटलासँ अर्थभेद ओझराएत। प्रत्येक क्रियारूपकें कर्ता, प्रसंग, पूर्ण वाक्य आ स्रोतसहित मिलेनाइ जरूरी अछि।

प्रश्नवाचक रूप

सहचर शब्द

मूल स्रोत-सारणी

मैथिलीसँ स्वतन्त्र अंगिका मानक

वाक्य-पुनर्लेखनक नमूना

वाक्यक संरचना केवल पदक्रम नहि, सूचना-केंद्र, निषेध, प्रश्न आ उपवाक्य-संबंधक क्रियाशील संयोजन अछि। वास्तविक पाठसँ कर्ता-कर्म-क्रिया, विराम आ परोक्ष कथनक भेद जाँचल जाए।

ध्वनिसमान शब्दक सावधानी

ध्वन्यात्मक मान्यता आ लिप्यन्तरणक साक्ष्यकें एक-दोसरासँ अलग देखबाक आवश्यकता अछि। वक्ता, क्षेत्र, उच्चारण-सन्दर्भ आ न्यूनतम युग्मक आधारपर एहि प्रतिपादनक पुनर्परीक्षण होयबाक चाही।

मूल स्रोत-सारणी

त्वरित मानक सारणी

पाँच चरणक सम्पादन

संक्षिप्त सर्वनाम-रूप

व्याकरणिक स्रोत-वाक्य

वाक्यक संरचना केवल पदक्रम नहि, सूचना-केंद्र, निषेध, प्रश्न आ उपवाक्य-संबंधक क्रियाशील संयोजन अछि। वास्तविक पाठसँ कर्ता-कर्म-क्रिया, विराम आ परोक्ष कथनक भेद जाँचल जाए।

स्रोतगत अधिकार-सारणी

दोसरा विस्तारक विषय-अवस्था

५२० प्रविष्टिक स्रोतगत शब्दसंग्रह

व्यक्ति-आदर अनुसार सहायक-क्रिया

सहायक-क्रियाक काम

काल-पक्ष-भाव रूपरेखा

दस क्रियाक तुलनात्मक सारणी

सर्वनाम/रूप-भेद

स्थानसूचक रूप

हिन्दीप्रभाव-जाँचक शब्द-तुलना

मैथिलीप्रभाव-जाँचक रूप-तुलना

तुलनात्मक प्रतिपादनमे समानता आ भिन्नताक दूनू पक्ष व्यवस्थित प्रमाणसहित राखल जाए। प्रमाण-प्राप्त क्षेत्र आ अप्राप्त क्षेत्रक सीमा स्पष्ट करब वैज्ञानिक निष्ठाक आधार अछि।

साहित्यिक स्रोतक संक्षिप्त उदाहरण

यन्त्र-परीक्षण संकेत

स्रोत-संकेत सूची

स्रोतगत सारणीसभक आवरण

सारणी १ : ९ पङ्क्ति × २ स्तम्भ

मूल सारणीक आरम्भिक संकेत — Label · Meaning | HOUSE-DEFAULT · Preferred neutral modern Thethi-Angika for new Videha prose. | PHONOGRAPHIC · Fine-grained spelling with special vowel/phonetic marks;

सम्पादकीय परीक्षण — सारणीक कोनो रूपक प्रसंग, क्षेत्र आ स्रोतगत दर्जा बुझल बिना ओकरा स्वतः सार्वभौम शब्दरूप नबनाओल जाए।

सारणी २ : ४ पङ्क्ति × ३ स्तम्भ

मूल सारणीक आरम्भिक संकेत — Layer · प्रयोग · Example policy | House/simple Devanagari · Novels, essays, translation, journalism, children's writing · Prefer readable forms; do not insert phonetic marks unless... | Phonographic/linguistic · Grammar, dictionary, field notes, pronunciation analysis · Retain forms such as हम्म, तोह, न, ओकरऽ where analytically...

सारणी ३ : १५ पङ्क्ति × ३ स्तम्भ

मूल सारणीक आरम्भिक संकेत — Hindi-shaped default · Thethi-Angika house direction · Status | और · आरो · HOUSE-DEFAULT connector in formal/neutral Thethi-Angika. | यह · ई · HOUSE-DEFAULT near demonstrative.

सारणी ४ : ११ पङ्क्ति × ३ स्तम्भ

मूल सारणीक आरम्भिक संकेत — Person/function · Documented forms · House guidance | 1st person · हम्मैं, हम्म; oblique हमरा; possessive

हमरऽ/हमरी · Use the project's simple or phonographic layer consistently. |
2nd person familiar · तोहँ, तों, तोंय; oblique तोरा/तोहरा · Do not substitute
Hindi तुम/तुम्हें.

सारणी ५ : १ पङ्क्ति × १ स्तम्भ

मूल सारणीक आरम्भिक संकेत — Never flatten Thethi-Angika auxiliaries into
Hindi है/हैं/था or...

सारणी ६ : ६ पङ्क्ति × २ स्तम्भ

मूल सारणीक आरम्भिक संकेत — Attested auxiliary family · Editorial use | छै
/ छी · Common present/copular/auxiliary functions; | छेकै / छिकै / छिका ·
Marked Angika auxiliary family; preserve where the selected...

सारणी ७ : १ पङ्क्ति × ३ स्तम्भ

मूल सारणीक आरम्भिक संकेत — Meaning · Preferred Thethi-Angika
resources · Editorial note | who · के · Human interrogative. | which · कोन ·
Selection.

सारणी ८ : ५ पङ्क्ति × ३ स्तम्भ

मूल सारणीक आरम्भिक संकेत — Attested type · Examples · Rule |
Companion pair · कोल-कोलासी, गप-सरक्का, आलती-पालथी · Preserve where
meaning is understood; | Social/family pair · धिया-पुता, गोतिया-लइया · Use
in appropriate social register.

सारणी ९ : १ पङ्क्ति × १ स्तम्भ

मूल सारणीक आरम्भिक संकेत — The Videha Pure Maithili Style Manual and
this Thethi-Angika...

सारणी १० : ७ पङ्क्ति × २ स्तम्भ

मूल सारणीक आरम्भिक संकेत — Risk · Thethi-Angika rule | Copying Maithili copulas · Do not replace Angika छै/छेकै/छिकै etc. with अछि/छथि by reflex. | Copying Maithili genitive · Do not force -क where Thethi-Angika uses के, केरऽ, pronoun...

सारणी ११ : ९ पङ्क्ति × ३ स्तम्भ

मूल सारणीक आरम्भिक संकेत — Source-shaped / avoid · House-style direction · Reason | और वह वहाँ नहीं गया । · आरो ऊ ओतय/वैंजां नै गेल... · Connector + demonstrative + negation; | यह मेरा भाई है । · ई हमरऽ भाय ... · Native demonstrative + possessive; choose auxiliary from context.

सारणी १२ : ६ पङ्क्ति × २ स्तम्भ

मूल सारणीक आरम्भिक संकेत — Example contrast · Editorial lesson | कप्पा / खोपा · Do not autocorrect unfamiliar local forms toward a common Hindi... | कोरनी / खोरनी · One consonant can change the domain and meaning.

सारणी १३ : १ पङ्क्ति × १ स्तम्भ

मूल सारणीक आरम्भिक संकेत — और · यह · वह · नहीं · किसी · कोई (when Angika कोय is intended) ...

सारणी १४ : १६ पङ्क्ति × ३ स्तम्भ

मूल सारणीक आरम्भिक संकेत — विषय · House default · Variants / caution | Script · Unicode Devanagari · Phonographic marks only when needed. | Connector ‘and’ · आरो · Regional/literary alternatives only with evidence.

सारणी १५ : ६ पङ्क्ति × २ स्तम्भ

मूल सारणीक आरम्भिक संकेत — Pass · Question | 1 — Meaning · Has any proposition, scene, relation or nuance been omitted or... | 2 — Language identity · Does the text sound like Thethi-Angika rather than Hindi or...

सारणी १६ : १५ पङ्क्ति × २ स्तम्भ

मूल सारणीक आरम्भिक संकेत — Function · Selected documented forms | 1st nominative · हममें / हमम् | 1st oblique · हमरा

सारणी १७ : ८ पङ्क्ति × २ स्तम्भ

मूल सारणीक आरम्भिक संकेत — Example · What to learn | ऐंजां कोय रहै छै । · Indefinite + locative/existential pattern. | कुइयाँ में कुच्छू गिरलऽ छै । · Indefinite non-person + perfect/result pattern.

सारणी १८ : ६ पङ्क्ति × ३ स्तम्भ

मूल सारणीक आरम्भिक संकेत — Source · प्रयोग · Do not do | Gajendra Thakur parallel grammar · Primary structure, editing workflow, Thethi-Angika scope · Do not treat common Maithili terms elsewhere in the 1111-page... | Angika Sahitya Kero Itihaas · Literary history, older orthography, cited verse/prose, author... · Do not treat its Hindi editorial prose as the Thethi-Angika...

सारणी १९ : ८ पङ्क्ति × ३ स्तम्भ

मूल सारणीक आरम्भिक संकेत — Batch 2 deliverable · Implementation status · Editorial safeguard | 1. 500–1000-item house lexicon · IMPLEMENTED: 520 entries · HOUSE-CORE separated from CORPUS-ATTESTED and PATTERN entries. | 2. Verb & auxiliary paradigms · IMPLEMENTED · Exact unattested person cells are not invented;

सारणी २० : २६१ पङ्क्ति × २ स्तम्भ

मूल सारणीक आरम्भिक संकेत — शब्द-प्रविष्टि · विषम संख्या · शब्द-प्रविष्टि · सम संख्या | L001 · आरो — and; also; neutral connector. [A-HOUSE; · L002 · ई — this; near demonstrative. [A-HOUSE; | L003 · एकरा — this one: oblique. [B-CORPUS; · L004 · हेकरा — near demonstrative: oblique variant. [B-CORPUS;

सारणी २१ : ७ पङ्क्ति × ५ स्तम्भ

मूल सारणीक आरम्भिक संकेत — Person / respect · Pronoun set · Present/copular family · Past/copular family · Direct attestation / rule | 1st person · हमें / हम्मं; oblique हमरा · छिऐ / छी / selected छै-family · छेलिए; also छलिए/छलियै family · हम्मं इसकूल गेलऽ छेलिए; छिऐ listed as person-specific. | 2nd familiar · तोह / तों / तोंय · selected छै-family; do not substitute Hindi हो/है · छेल्हो is directly attested; other past forms must be... · तोंय केकरा हाँ गेलऽ छेल्हो ?

सारणी २२ : ८ पङ्क्ति × ३ स्तम्भ

मूल सारणीक आरम्भिक संकेत — Family/form · Function in Batch 2 · House instruction | छै / छी · present/copular/auxiliary · Common core; choose by person/register. | छेकै / छिकै / छिका · marked Angika auxiliary family · Preserve where selected variety uses it;

सारणी २३ : ८ पङ्क्ति × ३ स्तम्भ

मूल सारणीक आरम्भिक संकेत — TAM/construction · Attested or house pattern · Editorial use | Simple/non-progressive base · खा-, जा-, चल-, कर-, लिख- etc. · Select local finite ending; do not paste Hindi endings. | Progressive · जाय/लिखी/करी + रहलऽ/रहली + auxiliary · Gender/person morphology may occur in the participial element.

सारणी २४ : ११ पङ्क्ति × ५ स्तम्भ

मूल सारणीक आरम्भिक संकेत — Lexical verb · Nonfinite/base resources · Progressive frame · Perfective/past evidence · Future/other | जा “go” · जा / जाय · जाय रहलऽ/रहली + aux · गेलऽ; गेली; गेला; गेलऽ छेलिए/छेल्हो · जैबै; person-selected future | कर “do” · कर / करी · करी रहलऽ + aux · source-selected finite past · करतै/करबै corpus patterns; verify person

सारणी २५ : १० पङ्क्ति × ५ स्तम्भ

मूल सारणीक आरम्भिक संकेत — Function · TH-HOUSE / simple · ANG-BROAD / variants · PHON / literary · Geographic note | 1st person · हम्मैं; हमरा; हमरऽ/हमरी · हमरा सिनी/आर etc. in plural constructions · हम्मैं · DISTRICT-UNSPEC | 2nd familiar · तोंय; तोरा; तोरऽ · तों; तोरहा/तोहरा; तोहरऽ/तोहरऽ · तोहैं · DISTRICT-UNSPEC

सारणी २६ : ८ पङ्क्ति × ४ स्तम्भ

मूल सारणीक आरम्भिक संकेत — Meaning · Preferred/attested form · Label · Caution | here · ऐंजां · TH-HOUSE / AG corpus · Use consistently within narrator voice. | there · वैंजां · TH-HOUSE / AG corpus · Strong attested locative.

सारणी २७ : ७७ पङ्क्ति × ३ स्तम्भ

मूल सारणीक आरम्भिक संकेत — Hindi-shaped trigger · Thethi-Angika direction · Check before replacing | और · आरो · Connector function; literary/corpus variants may occur. | यह · ई · Check near deixis and oblique case.

सारणी २८ : ४० पङ्क्ति × ३ स्तम्भ

मूल सारणीक आरम्भिक संकेत — Maithili reflex/risk · Thethi-Angika rule · Why it matters | आ as automatic “and” · Use आरो as neutral house connector · Small function words strongly signal language identity. | अछि / छथि · Use Angika छै/छैकै/छिकै/छिऐ etc. · Auxiliary system is a core structural marker.

सारणी २९ : ६ पङ्क्ति × ३ स्तम्भ

मूल सारणीक आरम्भिक संकेत — Source / type · Short attested snippet · Editorial lesson | “बेटी जलखै करी के जो” — narrative · “बात कुछ समय पहले केरऽ छिके” · Literary केरऽ + छिके cadence is valid source evidence; |

“भैंस आरो घोड़ा” — fable/dialogue · “भैंस आरो घोड़ा दोनों एके वन में रहे छेले” · आरो is strong connector evidence; छेले is a literary/corpus past...

सारणी ३० : २७ पङ्क्ति × ४ स्तम्भ

मूल सारणीक आरम्भिक संकेत — ID · Severity · Machine test / trigger ·
Required action | HIN-001 · ERROR · (?<![\u0900-\u097F])(और|यह|वह|
नहीं|किसी|कैसे|कौन|मेरा|तुम्हारा|उस... · Review for Hindi contamination;
preserve only if... | HIN-002 · ERROR · (?<![\u0900-\u097F])(है|हैं|था|थी|थे)
(?<![\u0900-\u097F]) · Recalculate person/TAM and select Angika auxiliary.

सारणी ३१ : १२ पङ्क्ति × २ स्तम्भ

मूल सारणीक आरम्भिक संकेत — Code · Source/use | M1 · Videha Thethi-
Angika Style Manual — Batch 1 (governing manual). | PG · Gajendra Thakur,
मैथिलीक एकटा समानान्तर व्याकरण, रचना आ भाषा...

अन्तिम भाग — भाषा-स्वायत्तता आ शैली-निर्णय

ठेठी-अंगिकामे निकटवर्ती भाषा आ क्षेत्रक सम्पर्कें प्रमाणित उदाहरणकें हटा देबाक अनुमति नहि मानू; एके रीतिसँ हिन्दी वा मैथिलीक अनधिकृत संरचना आरोपित नहि करू। ई खण्ड मूल शैली-नियम आ मूल स्रोतसाक्ष्यक अधिकार अलग राखैत अछि।

सन्दर्भ-सूची

मुख्य ग्रन्थ — गजेन्द्र ठाकुर, विदेह ठेठी-अंगिका लेखन-शैली निर्देशिका (पुनरीक्षित संस्करण, २०२६)।

main — <https://videha-ejournal.github.io/videha/index.htm>

archive — <https://videha-ejournal.github.io/videha/videha.htm>

samagra — <https://www.videha.co.in/gajendra-thakur-samagra.htm>

समापन — ठेठी-अंगिकाक साहित्यिक संवेदना ओकर उच्चारण, सर्वनाम, क्रियारूप आ लोकभाषिक सन्दर्भक संरक्षणसँ जुड़ल अछि।

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड-५८

ठेठी-अंगिकाक स्वतंत्र लोकस्वर, सम्बन्धचिह्न, सर्वनाम, क्रिया, अर्थक्षेत्र, स्रोतकोश आ संपादकीय जिम्मेवारीक अध्ययन।

मूल पाठ □ विस्तृत आलोचना □ सम्पादकीय चयन



विदेह



विदेह डिजिटल संग्रह